राष्ट्रीय अध्यापक षिक्षा परिषद
(भारत सरकार का एक विधिक निकाय)

गुरुर्गुरुतमो धाम
NCTE

National Council for Teacher Education
(A Statutory Body of the Government of India)

फा.सं.एनसीटीई–राज003 / 1 / 2022–O/oयूएस(रा.भा.)–मु. 108387 दिनांक: 03.03.2022

सेवा में,

संयुक्त सचिव, भारत सरकार
भाषा प्रभाग,
उच्च शिक्षा विभाग,
शिक्षा मंत्रालय, शास्त्री भवन,
नई दिल्ली–110001

विषय :– राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद में अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस आयोजन का प्रतिवेदन।

महोदया,

उपरोक्त विषय पर आपके दिनांक 03 जनवरी, 2022 के पत्रांक फा.सं. 8–64 / 2021 / एल–II के सन्दर्भ में उल्लेखनीय है कि निर्देशानुसार राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद के तत्वावधान में 21 फरवरी, 2022 को अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस का भव्य आयोजन किया गया। इस अवसर पर भारतीय मातृभाषाओं को सम्मान देने और उन्हें प्रोत्साहित करने की दृष्टि से अनेक कार्यक्रम आयोजित किए गये जैसे विभिन्न भाषा–भाषियों द्वारा अपने–अपने क्षेत्रीय परिधानों में वहां की भाषा व संस्कृति, कला, साहित्य, संगीत, गायन, नृत्य आदि प्रस्तुतियों के माध्यम से **"अनेकता में एकता"** के सूत्र को महिमामंडित किया गया। तत्सम्बन्धी एक रिपोर्ट (सचित्र) इसके साथ संलग्न है, अवलोकन करने की कृपा करें।

भवदीय

03/03/2022

(डा. अखिल कुमार श्रीवास्तव)
अवर सचिव (रा.भा.)

संलग्नक:–उपरोक्तानुसार

a/c

जी–7, सेक्टर–10, द्वारका, लैंडमार्क–मेट्रो, स्टेशन के पास, दिल्ली–110075
ई–मेल mail@ncte-india.org, वेबसाईट–http://www.ncte.gov.in

गुरुर्गुरुतमो धाम
NCTE

राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद

अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस आयोजन का प्रतिवेदन

राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद में 21 फरवरी, 2022 को **अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस** बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर एक **भव्य समारोह** का आयोजन किया गया, जिसमें अनेक कार्यक्रम आयोजित किए गये। समारोह स्थल पर समस्त अधिकारी/कर्मचारी सम्मिलित हुए। यह समारोह श्री प्रीतम सिंह, उप सचिव तथा श्रीमती नीलम शर्मा, उपसचिव की अध्यक्षता में संचालित किया गया। समारोह का संचालन करते हुए सर्वप्रथम नोडल अधिकारी (रा.भा.) ने मातृभाषा का तात्पर्य समझाते हुए कहा कि सर्वप्रथम एक मां अपने शिशु से जिस भाषा में बात करती है वही बच्चे की मातृभाषा कहलाती है। मां से सीखी हुई भाषा मनुष्य आजन्म प्रयोग में लाता है और इसीलिए मातृभाषा में अर्जित ज्ञान–विज्ञान आसानी से आत्मसात् कर लेता है। अपनी मातृभाषा में अपने भाव व विचारों को हम सुचारु रूप में व्यक्त कर सकते हैं, जबकि किसी दूसरी भाषा में अभिव्यक्ति में कभी भी पूर्णता नहीं आ सकती। उन्होंने कहा कि हमारी **नयी शिक्षा नीति 2020 में मातृभाषा** को विशेष महत्व दिया गया है। प्रारंभिक और उच्च माध्यमिक शिक्षा का माध्यम भारत के प्रत्येक क्षेत्र में उनकी मातृभाषा ही होगी, जिससे बच्चों का समग्र विकास संभव है।

मातृभाषा दिवस के अवसर पर विभिन्न भाषा–भाषियों द्वारा उनकी अपनी भाषा में विचार व्यक्त किए गये, जिसमें उस प्रदेश व क्षेत्र की संस्कृति, कला और संगीत की अभिव्यक्ति हुई है। इनमें **हरियाणवी, कश्मीरी, राजस्थानी, गढ़वाली, मणिपुरी, उड़िया, बंग्ला, पंजाबी, कन्नड़** आदि भाषाओं में अनेक रोचक प्रस्तुतियां की गयीं। किसी ने आलेख के माध्यम से तो किसी ने लोकगीतों या कविता के माध्यम से अपनी अभिव्यक्ति की है। मातृभाषा दिवस आयोजन में अनेक **सांस्कृतिक कार्यक्रम** भी आयोजित किए गये। विभिन्न प्रदेशों के निवासियों द्वारा अपने–अपने क्षेत्रों के लोकनृत्य, गायन व संगीत के माध्यम से मनोहर प्रस्तुतियां की गयीं। इनमें पंजाब का

मुक्त भंगड़ा, राजस्थानी घूमर, और **हरियाणवी लोकनृत्य** की प्रस्तुति बहुत ही आकर्षक थीं। सभी कलाकारों ने अपने क्षेत्रों की वेशभूषा में शानदार प्रदर्शन किया है। लोकनृत्य कार्यक्रम से सभी दर्शक अत्यधिक उत्साहित हुए। एक देशभक्तिपूर्ण गीत की भी सामूहिक रूप से प्रस्तुति की गयी।

अपने अध्यक्षीय सम्बोधन में श्री टी. पीतम सिंह, उप सचिव ने सबको मातृभाषा दिवस की शुभकामनाएं दीं और सभी कार्यक्रमों की मुक्तकंठ से भूरि–भूरि प्रशंसा की। उन्होंने **मणिपुरी** भाषा में एक लोकगीत की प्रस्तुति भी की है तथा दर्शकों को उसका आशय हिन्दी में भी समझाया है। श्रीमती नीलम शर्मा, उप सचिव ने भी अपने सम्बोधन में सभी को शुभकामनाएं देते हुए समस्त कार्यक्रमों की सराहना की । उन्होंने सभी मातृभाषाओं को सम्मान की दृष्टि से देखने और भारत की समस्त बोली/भाषाओं को प्रोत्साहित करने का सुझाव दिया।

मुख्य झलकियां

- श्रीमती कनिका ढिल्लों ने पंजाबी लोकगीत के साथ पंजाबी भाषा में अपनी मनभावन प्रस्तुति दी है।
- श्रीमती रूकैया खातुन ने कश्मीरी परिधान में जम्मू कश्मीर की सांस्कृतिक झलक की प्रस्तुति की है।
- श्रीमती सौभागिनी द्वारा उड़िया भाषा में शानदार प्रस्तुति की गई, जिसमें उन्होंने उड़ीसा की लोकसंस्कृति की विशेषता बतायी है।
- श्री अनिल कुमार ने गढ़वाली लोकगीत के मधुर गायन से उत्तराखंड के लोकगीत और लोकसंस्कृति को उजागर किया है।
- श्री चेतन मिश्रा ने राजस्थानी लोकगीत की आकर्षक प्रस्तुति की है।
- पंजाबी लोकनृत्य में श्रीमती पूनम पोखरियाल तथा श्री मोहित चावला ने अपनी अद्भुत अभिनय प्रतिभा का परिचय दिया है।
- हरियाणवी लोकनृत्य में कुमारी पूनम तथा कुमारी एकता का प्रदर्शन सभी के आकर्षण का केन्द्रबिन्दु रहा है।
- राजस्थानी घूमर नृत्य में कुमारी काजल तथा कुमारी रेखा की सराहनीय भूमिका रही है तथा राजस्थानी लोकसंस्कृति की अभिव्यक्ति की है।
- बंगाली भाषा एवं बंगाली परिधान में श्रीमती सुमिता तथा श्रीमती सुनंदा ने बंगाल की संस्कृति की झलक प्रस्तुत की और देशभक्ति के बांग्ला गीत द्वारा सबको उल्लासित किया है।
- कन्नड़ भाषा में कर्नाटक की संस्कृति का सजीव चित्रण प्रस्तुत करने में श्री रवि कुमार की प्रस्तुति प्रशंसनीय रही।

- भोजपुरी में श्री अनवर अंसारी ने बिहार और पूर्वी उत्तर प्रदेश की सांस्कृतिक झलक प्रस्तुत करने में जीवन्त भूमिका निभायी है।
- श्री राजकुमार ने अपनी ओजस्वी हरियाणवी कविता के माध्यम से हरियाणा के स्वाभिमानी इतिहास व संस्कृति की रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए तालियों की गड़गड़ाहट के साथ सभी दर्शकों की सराहना बटोरी है।

अन्त में नोडल अधिकारी (राजभाषा) श्रीमती दिनेश कुमारी ने अपने धन्यवाद प्रस्ताव में कहा कि सदस्य सचिव महोदया की प्रेरणा, प्रोत्साहन और मार्गदर्शन से इतना भव्य कार्यक्रम आयोजित करना संभव हो पाया है। अतः हम सब सदस्य सचिव महोदया के हृदय से आभारी हैं। अध्यक्षता करने वाले दोनों उप सचिवों के प्रति भी कृतज्ञता व्यक्त की गयी तथा व्यवस्था में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से अपना योगदान देने वाले सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को धन्यवाद देने के साथ समारोह का समापन किया गया।

अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर पर श्रीमती नीलम शर्मा, उप सचिव के साथ राजभाषा टीम के सदस्य

हरियाणवी लोकनृत्य की एक झलक

राजस्थानी लोक नृत्य (घूमर)

पंजाब का भांगड़ा